STEPPING STONE SCHOOL (HIGH)

CLASS: VIII

Worksheet - IX

Subject: Hindi Language **Date: 06-05-2020**

Topic: Comprehension **Time Limit: 30 mins**

सेकेंड क्लास तो क्या, मैंने कभी इंटर क्लास में भी सफ़र न किया था। अबकी सेकेंड क्लास में सफ़र करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। गाड़ी तो नौ बजे रात को आती थी, पर यात्रा के हर्ष में हम शाम को ही स्टेशन जा पहुँचे।

कुछ देर इधर-उधर सैर करने के बाद रिफ्रेशमेंट-रूम में जाकर हम लोगों ने भोजन किया। मेरी वेश-भूषा और रंग-ढंग से **पारखी** ख़ानसामों को यह पहचानने में देर न लगी कि मालिक कौन है और पिछलग्गू कौन; लेकिन न जाने क्यों मुझे उनकी गुस्ताख़ी बुरी लग रही थी। पैसे ईश्वरी के जेब से गए। शायद मेरे पिता को जो वेतन मिलता है, उससे ज़्यादा इन ख़ानसामों को इनाम-एकराम में मिल जाता हो। एक अठन्नी तो चलते समय ईश्वरी ही ने दे दी। फिर भी मैं उन सबों से उसी तत्परता और विनय की प्रतीक्षा करता था, जिससे वे ईश्वरी की सेवा कर रहे थे। ईश्वरी के हुक्म पर सब-के-सब क्यों दौड़ते हैं, लेकिन मैं कोई चीज़ माँगता हूँ तो उतना उत्साह नहीं दिखाते? मुझे भोजन में कुछ स्वाद न मिला। वह भेद मेरे ध्यान को संपूर्ण रूप से अपनी ओर खींचे हुए था।

गाड़ी आई, हम दोनों सवार हुए। ख़ानसामों ने ईश्वरी को

सलाम किया। मेरी ओर देखा भी नहीं।

ईश्वरी ने कहा— कितने तमीज़दार हैं ये सब। एक हमारे नौकर हैं कि कोई काम करने का ढंग नहीं।

मैंने खट्टे मन से कहा— इसी तरह अगर तुम अपने नौकरों को भी आठ आने रोज़ इनाम दिया करो तो शायद इससे ज़्यादा तमीज़दार हो जाएँ।

'तो क्या तुम समझते हो, यह सब केवल इनाम के लालच से इतनी इज़्ज़त करते हैं?'

'जी नहीं, तमीज़ और अदब तो इनके रक़्त में है।'

गाड़ी चली। डाक थी। प्रयाग से चली तो प्रतापगढ़ जाकर रुकी। एक आदमी ने हमारा कमरा खोला। मैं तुरन्त चिल्ला उठा— दूसरा दरजा है— सेकेंड क्लास है।

उस मुसाफ़िर ने डब्बे के अन्दर आकर मेरी ओर एक विचित्र उपेक्षा की दृष्टि से देखकर कहा— जी हाँ, सेवक भी इतना समझता है, और बीच वाली बर्थ पर बैठ गया। मुझे कितनी लज्जा आई, कह नहीं सकता।

भोर होते-होते हम लोग मुरादाबाद पहुँचे। स्टेशन पर कई आदमी हमारा स्वागत करने के लिए खड़े थे। दो भद्र पुरुष थे। पाँच बेगार। बेगारों ने हमारा लगेज उठाया। दोनों भद्र पुरुष पीछे-पीछे चले। एक मुसलमान था, रियासत अली; दूसरा ब्राह्मण था, रामहरख। दोनों ने मेरी ओर अपरिचित नेत्रों से देखा, मानो कह रहे हों, तुम कौवे होकर हंस के साथ कैसे?

रियासत अली ने ईश्वरी से पूछा— यह बाबू साहब क्या आपके साथ पढ़ते हैं?

ईश्वरी ने जवाब दिया— हाँ, साथ पढ़ते भी हैं, और साथ रहते भी हैं। यों कहिए कि आप ही की बदौलत मैं इलाहाबाद

पड़ा हुआ हूँ, नहीं तो कब का लख़नऊ चला आया होता। अबकी बार मैं इन्हें घसीट लाया। इनके घर से कई तार आ चुके थे; मगर मैंने इनकारी जवाब दिलवा दिए। आख़िरी तार तो अर्जेंट था, जिसकी फ़ीस चार आने प्रति शब्द है!

दोनों सज्जनों ने मेरी ओर चकित नेत्रों से देखा। आतंकित हो जाने की चेष्टा करते हुए जान पड़े।

रियासत अली ने अर्द्ध शंका के स्वर में कहा— लेकिन आप बड़े सादे लिबास में रहते हैं।

ईश्वरी ने शंका **निवारण** की— महात्मा गाँधी के भक्त हैं साहब! खद्दर के सिवा कुछ पहनते ही नहीं। पुराने सारे कपड़े जला डाले! यों कहो कि राजा हैं। ढाई लाख सालाना की रियासत है; पर आपकी मूरत देखो तो मालूम होता है, अभी अनाथालय से पकड़कर आए हैं।

रामहरख बोले— अमीरों का ऐसा स्वभाव बहुत कम देखने में आता है। कोई भाँप ही नहीं सकता।

रियासत अली ने समर्थन किया— आपने महाराज चाँगली को देखा होता, तो दाँतों तले उँगली दबाते। एक गाढ़े की **बंडी** और **चमरौधे** जूते पहने बाज़ारों में घूमा करते थे। सुनते हैं, एक बार बेगार में पकड़े गए थे।

मैं मन में कटा जा रहा था, पर न जाने क्या बात थी कि यह सफ़ेद झूठ उस वक़्त मुझे **हास्यास्पद** न जान पड़ा। उसके प्रत्येक वाक्य के साथ मानो मैं उस कल्पित वैभव के समीप आता जाता था।

मैं **शहसवार** नहीं हूँ। हाँ, लड़कपन में कई बार लद्दू घोड़ों पर सवार हुआ हूँ। यहाँ देखा तो दो घोड़े हमारे लिए तैयार खड़े

थे। मेरी तो जान ही निकल गई। सवार तो हुआ पर बोटियाँ काँप रही थीं। मैंने चेहरे पर शिकन न पड़ने दी। घोड़े को ईश्वरी के पीछे डाल दिया। खैरियत यह हुई कि ईश्वरी ने घोड़े को तेज न किया, वरना आगे में हाथ-पाँव तुड़वाकर लौटता। सम्भव है, ईश्वरी ने समझ लिया हो कि वह कितने पानी में है।

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें:-

प्र-1) वक्ता पहली बार किस क्लास में सफर कर रहा था तथा ट्रेन कितने बजे आती थी?
प्र-2) उन लोगों ने कहाँ भोजन किया?
प्र-3) ईश्वरी की हुक्म पर कौन दौड़ते थे और क्यों?
प्र-4) ईश्वरी ने अपने नौकरों के विषय में क्या कहा?
प्र-5) 'तो क्या तुम समझते हो, यह सब केवल इनाम के लालच से इतनी इज्जत करते हैं? यह वाक्य किसने और क्यों कहा?
प्र-6) भोर होते ही वे कहाँ पहुँचे और स्टेशन पर कितने लोग इंतजार कर रहे थे?
प्र-7) दोनों भद्र पुरुषों का परिचय दें।
प्र-8) ईश्वरी ने रियासत अली को क्या जवाब दिया?
प्र-9) रियासत अली ने वक्ता से क्या पूछा? ईश्वरी ने उसका क्या जवाब दिया?
प्र-10) रामदरख ने ईश्वरी की बात सुनकर क्या कहा?
प्र-11) वक्ता को घोड़े की सवारी के दौरान क्या महसूस हुआ?